बात भारत की

₹15.00

# पाञ्चजन्य

28 जुलाई, 2019

श्रावण कृष्ण 11, वि.सं. 2076, युगाब्द 5121

# सतत सनातन सेवा

भारत की सनातन संस्कृति में धर्म केवल अध्यात्म-साधना का ही सूत्र नहीं देता, बल्कि यह समाज से जुड़ने, उसकी पीड़ा हरने और उसे सत् मार्ग पर बढ़ाने का चिंतन भी देता है. संत और समाज के बीच अनूठे नाते से पगा है पाञ्चजन्य का यह विशिष्ट अंक

www.panchjanya.com https://twitter.com/epanchjanya https://www.facebook.com/epanchjanya

समाज सेवा और कल्याण का केन्द्र पटना स्थित महावीर मंदिर

# नासै रोग हरे सब पीरा...

**एक समय था जब बिहार में कैंसर के मरीजों की चिकित्सा की कोई व्यवस्था नहीं थी। लेकिन 1998 में महावीर मंदिर न्यास द्वारा महावीर कैंसर संस्थान के निर्माण के बाद से स्थिति बदलने लगी है। आज पटना में विश्व स्तरीय कैंसर संस्थान चल रहा है। 450 बिस्तरों वाले इस अस्पताल में कैंसर पर शोध भी होता है**

■ संजीव कुमार

सहरसा के सरोजा ग्राम निवासी 60 वर्षीय किसान रामाशीष सिंह के आंखों में बेबसी थी। डॉक्टरों ने उन्हें दूसरे स्तर (सेकिंड स्टेज) का गले का कैंसर बताया था। कुछ लोगों के सुझाव पर उन्होंने पटना में महावीर मंदिर न्यास द्वारा संचालित महावीर कैंसर संस्थान में अपनी चिकित्सा कराई और रोग से निजात पाई। आज रामाशीष सिंह सरीखे सैकड़ों मरीजों के लिए महावीर कैंसर संस्थान जीवनदाता संस्था बन गया है।

बिहार और झारखंड में लगभग 25 लाख कैंसर मरीज हैं। प्रतिवर्ष इस संख्या में 80 हजार की वृद्धि होती है। यहां कैंसर की चिकित्सा के लिए कोई विशेष व्यवस्था नहीं है। गरीब मरीजों को घुट-घुटकर जीना पड़ता था, लेकिन 1998 में जब महावीर मंदिर न्यास ने महावीर कैंसर संस्थान प्रारंभ किया तब से स्थिति बदलने लगी है। आज पटना के फुलवारी शरीफ में विश्व स्तरीय कैंसर संस्थान चल रहा है। 450 बिस्तरों वाले इस अस्पताल में कैंसर पर शोध भी किया जाता है। एक

कैंसर संस्थान की भव्य इमारत, जहां कैंसर की चिकित्सा के साथ ही इस पर शोध भी होता है

छत के नीचे इस रोग से जुड़ी तमाम तरह की चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध है। यहां मरीज मानवीय स्पर्श का अनुभव भी करते हैं। पटना स्टेशन से कैंसर मरीजों को लाने-ले जाने के लिए वाहन की सुविधा है। कैंसर से निजात पाकर हंसते-खेलते घर लौटने वाले मरीजों की संख्या निरंतर बढ़ रही है।

बिहार की पहचान भारत की धर्म-संस्कृति की साधनास्थली के रूप में होती है। इसी बिहार की राजधानी पटना के रेलवे जंक्शन के समीप स्थित है प्रख्यात महावीर मंदिर। कभी यहां एक जीर्णशीर्ण मंदिर हुआ करता था। एक महंत यहां की सारी व्यवस्थाएं देखते थे। आज यह बिहार के नवोत्थान की गाथा लिख रहा है। इस मंदिर में साधना करने के कारण ही पूर्व आईपीएस अधिकारी किशोर कुणाल को आचार्यश्री कहा जाता था। वे जब पटना के पुलिस अधीक्षक हुआ करते थे तो मंदिर की दुरावस्था देखकर उन्हें बड़ी पीड़ा होती थी। उन्होंने इस मंदिर का

**महावीर आरोग्य संस्थान में सामान्य मरीज 20 रु. और वरिष्ठजन 10 रुपये की फीस देकर एक महीने तक के लिए मुफ्त चिकित्सकीय परामर्श ले सकते हैं। यह संस्थान आज गरीब और बेसहारा मरीजों के लिए आशा और विश्वास का केन्द्र बन गया है**

कायाकल्प करने का फैसला किया और महावीर मंदिर को समाज जागरण का केन्द्र बनाने की ठान ली। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन क्षेत्र संघचालक स्व. कृष्णवल्लभ प्रसाद नारायण सिंह उपाख्य बबुआ जी से संपर्क साधा और महावीर मंदिर के माध्यम से समाज जागरण की अविरल गंगा बह निकली।

30 अक्तूबर, 1983 को पटनावासियों के प्रयास से मंदिर के नवनिर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ। उस समय उद्देश्य सिर्फ इसके कायाकल्प का था। लेकिन बजरंगबली ने कुछ समय बाद सेवा गंगा बहा दी। यह मंदिर आज आध्यात्मिक जागरण ही नहीं, बल्कि सामाजिक विकास के महान केन्द्र के रूप में जाना जाता है। 1985 में मंदिर का उद्घाटन हुआ और कुछ समय बाद ही मंदिर को संचालित करने के लिए न्यास का गठन हुआ।

यह मंदिर अब बिहार सेवा कार्य का अद्भुत उदाहरण बना है। महावीर कैंसर संस्थान के अलावा महावीर मंदिर न्यास के द्वारा महावीर आरोग्य संस्थान और महावीर वात्सल्य अस्पताल भी संचालित किया जा रहा है। मंदिर न्यास के प्रबंध न्यासी आचार्य किशोर कुणाल कहते हैं कि धर्म का अर्थ लोगों ने एक रूढ़ि को समझ रखा था। मंदिर के द्वारा समाज कल्याण का कार्य भी बेहतर तरीके से होना चाहिए। पटना के प्रमुख चिकित्सकों के साथ मिलकर 2 जनवरी, 1988 को महावीर आरोग्य संस्थान का बीजारोपण किया गया। पूज्य शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती जी ने 7 नवंबर, 1988 को महावीर आरोग्य संस्थान की नींव रखी। 1 जनवरी, 1989 को किदवईपुरी में एक किराये के मकान से यह संस्था प्रारंभ हुई। समाज को सस्ती दर पर विश्वसनीय चिकित्सकीय सुविधा देने के लिए इस संस्थान को प्रारंभ किया गया था। मरीजों की संख्या बढ़ने लगी। बाद में इसे पटना के कंकड़बाग इलाके में स्थानांतरित किया गया। धीरे-धीरे महावीर आरोग्य संस्थान का विकास होता चला गया।

कंकड़बाग में ही मंदिर न्यास ने स्वर्गीय डॉ. एस.एन. उपाध्याय के पुराने नर्सिंग होम को खरीद कर वहां इस संस्थान को स्थापित किया। उससे सटे भवन को भी लीज पर लेकर 60 बिस्तरों वाला अस्पताल शुरू किया गया। आज पटना और आस-पास के इलाकों के हजारों परिवार इस संस्था से जुड़कर मुफ्त

चिकित्सकीय परामर्श ले रहे हैं। यहां दवाइयां कम कीमत पर मिलती हैं। अत्याधुनिक चिकित्सकीय तकनीक और विशेषज्ञों द्वारा कम खर्चीली या करीब-करीब निःशुल्क चिकित्सा की जाती है। आज यह संस्थान गरीब एवं मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए आशा की एक सुनहरी किरण बना है। यहां नेफ्रोलॉजी, कॉर्डियोलॉजी और गैस्ट्रो, सामान्य सर्जरी, प्लास्टिक सर्जरी, न्यूरो सर्जरी सरीखे कई विशेषज्ञ इलाज उपलब्ध हैं। सामान्य बीमारी के लिए भी चिकित्सक उपलब्ध हैं। यहां सस्ती दर पर कई जांच उपलब्ध हैं। यहां नर्सिंग सेवा के लिए कोई अतिरिक्त शुःल्क नहीं देना पड़ता। यहां आयुर्वेद, होमियोपैथी और फिजियोथेरेपी की भी सुविधा उपलब्ध है। बोलने-सुनने में अशक्त लोगों के लिए भी चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध है। 'नो प्रॉफिट नो लॉस' के सिद्धांत पर संस्थान द्वारा डायबिटिक पैकेज, कार्डियेक पैकेज और टोटल हेल्थ केयर की सुविधा उपलब्ध कराई जाती है।

इसी परिसर में महावीर नेत्रालय भी चलता है। नेत्र रोगियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए 21 जनवरी, 2007 को इसका विधिवत् उद्घाटन किया गया। शंकर नेत्रालय, चेन्नै और कोलकाता, अलीगढ़ तथा सीतापुर जैसे संस्थानों के प्रख्यात नेत्र चिकित्सक यहां नियमित अपनी सेवाएं देते हैं। आज इस अस्पताल में लगभग 150 मरीज प्रतिदिन ओपीडी में आते हैं। यहां नेत्र से संबंधित कई सुविधाएं उपलब्ध हैं।

महावीर आरोग्य संस्थान द्वारा कई शिविर भी लगाये जाते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में परिवार नियोजन और नेत्र चिकित्सा शिविर भी लगाए जाते हैं। संस्थान में पोलियो, मिजिल्स, डीपीटी और बीसीजी का टीका मुफ्त में लगाया जाता है। इसके अलावा टीबी और कुष्ठ रोगियों के लिए भी मुफ्त में दवाई दी जाती है। यहां सामान्य मरीज 20 रुपये और वरिष्ठ जन 10 रुपये की फीस देकर एक महीने तक

आचार्य किशोर कुणाल

**'दलित देवो भवः' नामक पुस्तक के रचयिता आचार्य किशोर कुणाल ने कथनी ही नहीं बल्कि करनी से भी यह सिद्ध किया है कि समाज के सहयोग से, समाज के लिए बहुत कुछ किया जा सकता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है पटना का महावीर मंदिर**

के लिए मुफ्त चिकित्सकीय परामर्श ले सकते हैं। यहां ऑपरेशन एवं जांच का खर्च कम से कम रखने का प्रयास लगातार किया जाता है। यह संस्थान आज गरीब और बेसहारा मरीजों के लिए आशा और विश्वास का केन्द्र बन गया है। दिव्यांग लोगों के लिए भी संस्थान में कई सुविधाएं उपलब्ध हैं। मंदिर के द्वारा दंत चिकित्सा का भी कार्य किया जाता है।

महावीर आरोग्य संस्थान में आने वाले मरीजों को देखते हुए ही महावीर कैंसर संस्थान और बाद में महावीर वात्सल्य अस्पताल प्रारंभ किया गया था। महावीर वात्सल्य संस्थान का भूमि पूजन 21 अक्तूबर, 2003 को महामंडलेश्वर स्वामी श्री विद्यानंद गिरी जी महाराज के कर-कमलों द्वारा किया गया था। 30 अक्तूबर, 2006 को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इस अस्पताल का उद्घाटन किया था। नवजात एवं बच्चों के इलाज के लिए स्थापित यह अस्पताल शीघ्र ही अपनी एक विशेष पहचान बनाने लगा। आज यहां 120 बिस्तरों का अस्पताल है। गर्भवती महिलाओं, नवजात बच्चों एवं अन्य छोटे बच्चों के लिए अत्याधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं। यहां 24 घंटे ऑपरेशन की सुविधा है। नवजात बच्चों के लिए 30 बिस्तर का 'निकू' (निओनेटल इन्टेंसिव केयर यूनिट) कार्यरत है। नवजात बच्चों के लिए एम्बुलेंस की सुविधा भी पटना नगर निगम क्षेत्र में उपलब्ध है। उसके अलावा भी कई सुविधाएं नवजात बच्चों के लिए यहां उपलब्ध कराई गई हैं। यह बच्चों की शल्य क्रिया की भी यहां व्यवस्था है। छोटे बच्चों के घुटने की शल्य क्रिया भी यहां होती है। निःसंतान दंपतियों के कष्ट निवारण के लिए भी अस्पताल प्रबंधन चिकित्सीय व्यवस्था करता है।

महावीर मंदिर न्यास द्वारा संचालित ये सभी अस्पताल महावीर मंदिर में चढ़ावे से प्राप्त राशि द्वारा ही संचालित हैं। महावीर मंदिर प्रबंधन न्यास दीन-हीन और भूखे लोगों को प्रतिदिन भरपेट प्रसाद देने के लिए दरिद्र नारायण भोज, साधु-संतों के लिए साधु सेवा, समाज को स्वस्थ साहित्य पढ़ने का अवसर देने के लिए एक समृद्ध पुस्तकालय, महावीर मंदिर प्रकाशन, ज्योतिष सलाह केन्द्र सरीखे कई कार्य करता है। मंदिर परिसर में भगवान को भोग चढ़ाने के लिए तिरुपति के कारीगरों द्वारा निर्मित नैवेद्यम भी बिक्री के लिए उपलब्ध रहता है।

इस माह से भगवान को चढ़ाया गया भोग ही प्रसादम् के रूप में उपलब्ध है। 'दलित देवो भवः' नामक पुस्तक के रचयिता आचार्य किशोर कुणाल ने सिर्फ कथनी से ही नहीं बल्कि करनी से भी यह कर दिखाया है कि समाज के सहयोग से, समाज के लिए बहुत कुछ किया जा सकता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है पटना का महावीर मंदिर। ■